FACTORS OF LOCATION OF ECONOMIC ACTIVITIES

पृथ्वी सतह विभेदन के गुणों से युक्त है फलतः सम्पूर्ण सतह पर मानव के आर्थिक क्रियाकलाप ~~समान~~ समान रूप से वितरित नहीं है। कुछ स्थानों पर कृषि कार्यों का संकेन्द्रण हुआ है तो कुछ स्थानों पर खनन गतिविधियों का और कुछ स्थानों पर विनिर्माण उद्योगों और मत्स्य ग्रहण संबंधी क्रियाकलापों का/ कुछ निश्चित अवस्थितियों पर कुछ निश्चित आर्थिक क्रियाकलापों का संकेन्द्रण हो जाता है।

आर्थिक क्रियाकलाप के इस संकेन्द्रण को निम्नलिखित कारक प्रभावित करते हैं :→

- पूर्ववर्ती विकास का प्रारूप : → मानव के आर्थिक क्रियाकलापों की वर्तमान अवस्थितियों का प्रभाव भविष्य की अवस्थितियों पर सर्वाधिक पड़ता है। मानव के अवस्थिति संबंधी निर्णय भूतकालीन अनुभवों से प्रेरित होते हैं। फलतः ये भूतकालीन अनुभव वर्तमान अवस्थितियों को और अधिक सुदृढ़ करते हैं, क्योंकि मानव नई अवस्थिति के स्थान पर वर्तमान के विद्यमान अवस्थिति पर आर्थिक गतिविधियों का संचालन द्वारा उसे मजबूत करने का प्रयास करता है। उदाहरण → एक उद्योगपति अपनी पूंजी का अधिकांश भाग विद्यमान कारखाने के आधुनिकीकरण में निवेशित करता है, बजाय ~~इसके~~ इसके कि कारखाने को नए स्थान पर स्थापित किया जाय।
- स्थलरूप : → आर्थिक क्रियाकलापों के संचालन में संलग्न लागत को स्थलरूप प्रभावित एवं नियन्त्रित करते हैं। विषमता युक्त धरातल एवं ढालू भूमि पर कृषि कार्य सीमित हो जाते हैं। ढालू भूमि पर समोच्च रेखी खेती में अधिक मानवीय श्रम की आवश्यकता होती है और भूमि के अपरदन की संभावना भी अधिक होती है। जबकि समतल भू-भाग में कृषि कार्य आसान भी होते हैं और सस्ते भी। जनसंख्या के बढ़ते ~~ल~~ दबाव से पहाड़ी भूमि पर अधिक लागत युक्त कृषि होने लगी है। वर्तमान में यंत्रीकृत कृषि पूर्णतया समतल मैदान

भागों में ही सम्पन्न होती है। रेल एवं सड़क मार्गों की निर्माण लागत भी स्थान रूपों के ढाल एवं कठोरता पर निर्भर करती है। मैदानी भागों में इनके निर्माण की लागत अपेक्षाकृत कम आती है जबकि पर्वतीय क्षेत्र में परिवहन मार्ग एवं परिवहन लागत को कम करने के उद्देश्य से बनाई जाने वाली महँगी सुरंगों एवं पुलों के कारण इनकी निर्माण लागत अधिक आती है। विषम धरातल से युक्त पर्वतीय क्षेत्रों में परिवहन मार्गों का निर्माण दुष्कर होता है। फलतः पर्वतीय और मैदानी भागों के आर्थिक विकास और सांस्कृतिक विकास में स्पष्ट भिन्नता देखने को मिलती है। विषम धरातल से युक्त क्षेत्रों में नगरीय एवं औद्योगिक अधिवासों का निर्माण अधिक खर्चीला होता है, परंतु ऐसे में भी इनका निर्माण खनिज और शिलर जैसे बहुमूल्य संसाधनों के दोहन के कारण हो जाता है। नदियों, झीलों और समुद्रतट के किनारे भी मानव के आर्थिक क्रियाकलापों का संकेन्द्रण हुआ है, क्योंकि ये सस्ता परिवहन उपलब्ध कराते हैं। विश्व के कई बड़े नगर नदियों और झीलों के किनारे पर स्थित हैं। इन नगरों में वस्तुओं के विनिमय एवं वस्तुओं को संसाधित करने वाले क्रियाकलापों का सर्वाधिक संकेन्द्रण हुआ है।

(•) जलवायु, मिट्टी एवं वनस्पति :—

मानव के आर्थिक क्रियाक
की जलवायु पर निर्भरता स्वाभाविक है ही है। अनुकूल जलवायवीय द
वाले भागों में ही कृषि कार्य सम्पन्न होते हैं। तापमान संबंधी दशा
फसल विशेष के स्थानिक परिसर (Spatial Range) को नियंत्रित कर
किसी भी क्षेत्र में फसलों के वर्धन काल की लम्बाई भी तापमान संबंध
दशाओं से निर्धारित होती है। वृष्टि के वितरण द्वारा कृषि फ
की उपज प्रभावित होती है। अत्यधिक सुखग्रस्त क्षेत्र आर्द्रता की
के कारण कृषि की दृष्टि से अनुपयुक्त क्षेत्र है। ऐसे क्षेत्र जल
के कारण औद्योगिक गतिविधियों के विकास में भी बाधक
प्रतिकूल दशाओं वाले क्षेत्र में भी मानव ने उच्च स्तरीय प्रौ
के प्रयोग द्वारा कृषि कार्य को संभव बनाया है। उदाहरण :—
जापान ने कृषि भूमि का गहन उपयोग एवं कृषि कार्यों में य
उपयोग कर अपनी विशाल जनसंख्या की खाद्यान्न आवश्यक

किया है।

आर्थिक क्रियाकलापों की अवस्थिति पर जलवायु के सीमाकारी प्रभावों को मानव ने सिंचाई सुविधाओं का विस्तार कर नदी बेसिनों में अपरदन रोधी उपायों को अपनाकर एवं कृषि फसलों की नई किस्मों का उपयोग कर कम किया है।

मानव के औद्योगिक क्रियाकलापों की अवस्थिति पर जलवायु का प्रभाव सीमित ही है यद्यपि यह सही है कि उष्ण और आर्द्र जलवायवीय दशाओं ने मानव की कार्य क्षमता घट जाती हैं और उष्ण दशाओं में बीमारियों के प्रकोप के कारण कार्यदिवसों की संख्या कम हो जाती है तथापि उद्योगों में अपेक्षित तापमान स्तर को बनाये रखने के लिए प्रयुक्त शीत और गर्म प्रशीतकों के कारण औद्योगिक अवस्थितियों पर जलवायु का प्रभाव अब महत्वपूर्ण नहीं रहा है।

सुप्रवाहित जल प्रवाह वाले क्षेत्रों में आर्थिक क्रियाकलापों का संकेन्द्रण शीघ्रता से होता है। प्राकृतिक वनस्पति का अवस्थितिकीय प्रभाव विद्यमान प्रौद्योगिकी के स्तर पर निर्भर करता है। मशीनी प्रक्रियाओं के द्वारा पेड़ों को काटे जाने के उपरांत वन क्षेत्रों में भी कृषि जैसे आर्थिक क्रियाकलापों का प्रारंभ हो चुका है। इसी प्रकार घास स्थल भी कृषि क्षेत्रों में परिवर्तित हो गए हैं।

औद्योगिक क्रांति के पश्चात् खनिज एवं शक्ति संसाधनों की उपलब्धि वाले क्षेत्रों के निकट आर्थिक गतिविधियों का संकेन्द्रण हुआ है। खनिजों के व्यापारिक दोहन के लिए खान के स्थान के चुनाव को अयस्क की गुणवत्ता, भूवैज्ञानिक दशाएँ, खान की गहराई, उपलब्ध प्रौद्योगिकी, उपलब्ध पूंजी एवं श्रम तथा खानों तक पहुँच की सुगम्यता आदि कारक प्रभावित करते हैं। खनन काम शुरू होने से परिवहन की सुविधाओं का विकास होने लगता है तथा उस क्षेत्र में लोग रहने के लिए आने लगते हैं। इसके साथ ही साथ अन्य आर्थिक गतिविधियों का संकेन्द्रण भी होने लगा। कृषि, उद्योग, परिवहन, आदि आर्थिक क्रियाकलापों की संचालन के पर्यावरणीय दशाओं से प्रभावित होती है, लेकिन विश्व के विकसित क्षे

विकासशील देशों के बीच विद्यमान भिन्नता पर्यावरणीय दशाओं के कारण नहीं है अपितु उपयोग में लाई जाने वाली प्रौद्योगिकी में भिन्नता के कारण है।

स्थानिक विशेषताएँ और अवस्थिति :—→

मानव के प्रत्येक क्रियाकलाप के संचालन हेतु स्थान (Space) की आवश्यकता होती है। यह स्थान खेत, उद्योग मकान या भवन आदि हो सकता है। चूँकि मानव की प्रत्येक गतिविधि को स्थान की आवश्यकता होती है अतः दूरी (distance) इन आर्थिक गतिविधि के प्रारूप को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रत्येक क्रियाकलाप हेतु अलग-अलग मात्रा में स्थान की आवश्यकता होती है। फलतः प्रत्येक अवस्थिति की उपयुक्तता न सिर्फ उसकी विद्यमान विशेषताओं को अपितु उसकी भविष्य की संभावनाओं को निर्धारित करती है अर्थात् पहुँच की दृष्टि से उपयुक्त अवस्थितियों पर मानवीय गतिविधियों का सर्वाधिक संकेन्द्रण होता है।

आर्थिक क्रियाकलाप की अवस्थिति पर परिवहन लागत संरचना का स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। Tapering rate structure के कारण आर्थिक क्रियाकलापों की उत्तम स्थिति या तो कच्चे माल स्रोत पर होती है या फिर बाजार पर होती है। इसी प्रकार कच्चा माल के स्रोत क्षेत्र एवं बाजार के मध्य माल परिवर्तन बिंदु (Break of Bulk) आर्थिक क्रियाकलाप की अवस्थिति का सर्वोत्तम स्थल होता है, क्योंकि इन माल परिवर्तन स्थान पर माल के स्थानांतरण की लागत नहीं लगती है।

संचयी किफायतें (Economies of Scale) भी आर्थिक गतिविधियों की अवस्थिति को प्रभावित करती है। बाह्य संचयी किफायतें (External Economies) के द्वारा सस्ते मूल्य पर कुशल श्रमिक मिल जाते हैं। साथ ही प्रमुख उद्योग के साथ गाँठा एवं पूरक उद्योगों के स्थापित हो जाने से एक उद्योग के तैयार माल को दूसरा उद्योग कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त करने लगता है। जैसे-जैसे समूहीकरण का आकार बढ़ता जाता है वैसे-वैसे आधारिक संरचना वाली सुविधाओं (Infrastructural facilities) जैसे विद्युत, जलापूर्ति, परिवहन लागत में प्रति इकाई खर्च कम हो जाता है और आर्थिक गतिविधियों वाले केन्द्रों को ये सुविधायें कम खर्च में उपलब्ध हो जाती है संचयी किफा के कारण आर्थिक क्रियाकलापों का भौगोलिक केन्द्रीकरण होने लगता है। किसी स्थान के सापेक्षिक स्थिति का प्रभाव भी आर्थिक क्रियाकलापों की अव पर पड़ता है। सिंगापुर और जिब्राल्टर जलडमरूमध्य पर स्थित हैं फलतः परिवहन एवं संचार की बेहतर सुविधाएँ प्राप्त हैं। इसी प्रकार पर्वतीय झीलों के किनारे अथवा छोर पर स्थित स्थान भी आर्थिक गतिविधियों के महत्वपूर्ण अवस्थिति स्थल होते हैं। परिवहन मार्गों के जंक्शन बिंदु पर स्थान संसाधनों की दृष्टि से समृद्ध न होने के उपरांत भी आर्थिक लापों की अवस्थिति वाले स्थल होते हैं।